दैनिक जागरण
सप्तरंग
साहित्यिक पुनर्नवा
सोमवार, 4 दिसंबर 2017

हलचलें – साहित्य जगत की

1. मैथिलि ग्रंथ का विमोचन

मैथिलि और हिंदी के लेखक रवीन्द्र नारायण मिश्र की पुस्तक 'भोर-सा सांझ-परि' का लोकार्पण समारोह प्रवासी भवन, नई दिल्ली में हुआ जिसमें कुलदीप सलिल, ओम सारा, डॉ. शेफालिका वर्मा, निवेदिता झा, डॉ. सविता झा खान, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, चित्रकार किशनलाल दुग्गल आदि साहित्यकारों ने कृति और कृतिकार के वैशिष्ट्य की चर्चा की। संचालन कवि उमेश मेहता ने किया।

2. जगदीश चंद्र माथुर जन्म शताब्दी समारोह

स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिंदी के पहले बड़े नाटककार जगदीश चंद्र माथुर की जन्म शताब्दी पर साहित्य अकादमी के सहयोग से अभिरंग संस्था द्वारा 18 नवंबर को हिंदू कॉलेज (दिल्ली) में आयोजित संगोष्ठी में बीज वक्तव्य देते हुए साहित्यकार डॉ. नरेंद्र मोहन ने कहा कि वे बड़े लेखक ही नहीं पहले रंगकर्मी थे जिन्होंने महत्वपूर्ण नाटक लिखे। उन्होंने माथुर के प्रसिद्ध नाटक 'कोणार्क' की रचना में विशाखा की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि उनका योगदान अविस्मरणीय है। समारोह में दयाप्रकाश सिन्हा, प्रताप सहगल, शरद दत्त आदि के साथ ललित माथुर ने भी माथुर के कृतित्व पर प्रकाश डाला और उनसे जुड़ी यादों को साझा किया।

3. साहित्यिक विधाओं की धमाकेदार वापसी

लगता है हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में साहित्य और उसकी विभिन्न विधाओं की वापसी जोरदार तरीके से हो रही है। महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय की पत्रिका 'बहुवचन' का संस्मरण विशेषांक और 17 वर्षों की अनुपस्थिति के बाद 'इंडिया टुडे' की साहित्य वार्षिकी का प्रकाशन निश्चित रूप से इस बात का सूचक है कि संचार माध्यमों में फिर से साहित्य का बोलबाला हो रहा है। 'बहुवचन' के भारी भरकम 'स्मरण में जीवन' विशेषांक में लगभग सभी पीढ़ियों के महत्वपूर्ण साहित्यकारों से जुड़े संस्मरण हैं जिन्हें जाने-माने लेखकों ने मनोयोग से लिखा है। हिंदी में इस उपेक्षित सी विधा के विकास की दृष्टि से यह एक सराहनीय प्रयास है। इसी तरह इंडिया टुडे की साहित्य वार्षिकी में काफी पठनीय सामग्री है। खास तौर से एकदम नई पीढ़ी की रचनात्मकता को इसमें महत्व दिया गया है।

साक्षात्कार

रोहित कुमार

सांचे-खांचे के बिना देखें मीरां

माधव हाड़ा ने अपनी प्रारंभिक पहचान कविता के आलोचक के रूप में बनाई थी। 'तनी हुई रस्सी पर' तथा 'कविता का पूरा दृश्य' जैसी अपनी आलोचना पुस्तकों ने इस पहचान को पुष्ट किया था। बाद में वे मीरां की कविता को समझने के क्रम में मीरां के जीवन और समाज पर गहरे शोध में संलग्न हुए और कई वर्षों के अध्ययन-अन्वेषण और परिश्रम के बाद आई उनकी पुस्तक 'पचरंग चोला पहन सखी री' को हिंदी समाज ने मुक्त कंठ से सराहना की। अभी उन्होंने साहित्य अकादमी के लिए 'मीरां रचना संचयन' भी तैयार किया है। उनके शोध और मीरां के जीवन पर रोहित कुमार से बातचीत के प्रमुख अंश...

मीरां पर दर्जनों किताबें लिखी गई हैं। शोध हुए और अनगिनत फिल्में भी। आपने किस विश्वास से मीरां पर काम शुरू किया कि कुछ नया और प्रामाणिक कर सकेंगे?

[illegible]

चित्तौड़ और उदयपुर में अब भी मीरां की कोई यादें बची हैं?

[illegible]

आपने अपने कार्य में विश्वनाथ त्रिपाठी, आनलफ्राइड स्लाग और परिता मुक्ता के महत्वपूर्ण समझे जाने वाले कार्य को खारिज किया। क्या इनका काम कोई दिशा देने वाला नहीं था?

[illegible]

आपका राजस्थानी भाषी होना और क्षत्रिय संस्कृति से संबंध रखना ऐसे काम में कितना सहायक हुआ?

[illegible]

आपने यह तथ्य निकालकर बताया कि मीरां जीवन के अंत तक स्वाभिमान और सम्मान से जीवन यापन कर रही थीं और मेवाड़ राजसत्ता ने उन्हें बड़े जागीरदार का दर्जा दे रखा था। क्या यह बात वैसी ही नहीं कि हम लेखक के बैंक खातों की जांच करें?

[illegible]

मीरां के जीवन के बाद आपने साहित्य अकादमी के लिए उनके पदों का प्रामाणिक संचयन भी तैयार किया। यह प्रामाणिक क्या है? क्या भक्ति साहित्य के विद्वान परशुराम चतुर्वेदी के संकलन के पद प्रामाणिक नहीं?

[illegible]

2/?, [illegible]
[illegible], नई दिल्ली-110067